ओडिसा राज्य दिवस पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 31 मार्च 2024, रविवार	**समय : 5.30 PM**	**स्थान : जीएमसीएच ऑडिटोरियम**

- मंचासीन महानुभावों तथा
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

नमस्कार,

सबसे पहले, आज "उड़ीसा दिवस" की पूर्व संध्या पर, आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएँ।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि 1 अप्रैल को, हर साल उड़ीसा दिवस मनाया जाता है। आज 31 मार्च है। हमने यह कार्यक्रम उड़ीसा दिवस की पूर्व संध्या पर रखा है। इस मौके पर असम में रह रहे उड़ीसा के सभी लोगों के साथ-साथ यहाँ उपस्थित हर व्यक्ति को एक बार पुन: अभिनंदन और बधाई देता हूँ।

1 अप्रैल, 1936 को, देश का पहला भाषा-आधारित राज्य के रूप में "उड़ीसा प्रांत" का गठन हुआ था। उड़ीसा प्रांत के गठन में अनेक लोगों ने अपना खून-पसीना बहाया है, जिनमें “उत्कल-गौरव” मधुसूदन दास, “उत्कल-मणि” गोपबंधु दास, महाराज कृष्ण चंद्र गजपति, भक्तकवि मधुसूदन राव, पंडित नीलकंठ दास, व्यास कवि फकीर मोहन सेनापति, कवि राधानाथ राय आदि का योगदान सराहनीय है। उड़ीसा राज्य के गठन में जिन लोगों ने अथक प्रयत्न और संघर्ष किए, उन्हें इस मौके पर मैं नमन करता हूँ।

“उत्कल-गौरव” मधुसूदन दास ने सन 1903 में उड़िया भाषा की सुरक्षा एवं राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास को लेकर "उत्कल सम्मेलनी" का गठन किया था। इसके बाद सम्मेलनी के सदस्यों को उड़िया भाषा के प्रति जागृत करने में जुट गए और भाषा के आधार पर उत्कल प्रांत यानी उड़ीसा राज्य के गठन की मांग तेज कर दी। इसमें पूरे प्रांत से लोगों का समर्थन मिलने लगा।

सन् 1920 में उत्कल सम्मेलनी की ओर से कांग्रेस अधिवेशन में उड़ीसा को भाषा आधारित एक राज्य बनाने का प्रस्ताव दिया गया। इस प्रस्ताव पर 1 अप्रैल 1936 को मुहर लग गई और उड़ीसा एक स्वतंत्र भाषा आधारित राज्य घोषित कर दिया गया।

आपको मालूम होगा कि इससे पहले उड़ीसा, बंगाल एवं बिहार का हिस्सा हुआ करता था। उड़ीसा को 1936 में भाषा आधारित स्वतंत्र राज्य का दर्जा मिला, जबकि 1950 में भारत की आजादी के बाद उड़ीसा देश का एक स्वतंत्र राज्य बना।

देश में भले ही भाषा के आधार पर अगल-अलग राज्य हैं, लेकिन इनकी संस्कृति और सभ्यता एक है, जो एक राष्ट्र की भावना को दर्शाती है। विविधताओं के बावजूद भारत सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में आस्तित्व में रहा है। अनेकता में एकता हमारी सांस्कृतिक परंपरा की विशेष पहचान है।

मित्रो,

उड़ीसा राज्य प्राचीन समय में 'कलिंग' के नाम से विख्यात था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी (261 ई.पू.) में मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग विजय करने के लिए एक शक्तिशाली सेना भेजी थी, जिसका कलिंग के निवासियों ने जमकर सामना किया। सम्राट अशोक ने कलिंग तो जीता, परन्तु युद्ध के भीषण संहार से सम्राट का मन में वितृष्णा पैदा हो गई और अशोक की मृत्यु के बाद कलिंग फिर से स्वाधीन हो गया।

ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में खारवेल राजा के अधीन कलिंग एक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया। खारवेल की मृत्यु के बाद उड़ीसा की ख्याति लुप्त हो गई। चौथी शताब्दी में विजय पर निकले समुद्रगुप्त ने उड़ीसा पर आक्रमण किया और इस प्रदेश के पांच राजाओं को पराजित किया। सन् 610 में उड़ीसा पर शशांक नरेश का अधिकार हो गया। शशांक के निधन के बाद हर्षवर्धन ने उड़ीसा पर विजय प्राप्त की।

सातवीं शताब्दी में उड़ीसा पर गंग वंश का शासन रहा। सन् 795 में महाशिवगुप्त यजाति द्वितीय ने उड़ीसा का शासन भार संभाला और उड़ीसा के इतिहास का सबसे गौरवशाली अध्याय शुरू हुआ। उन्होंने कलिंग, कनगोडा, उत्कल और कोशल को मिलाकर खारवेल की भाँति विशाल साम्राज्य की नींव रखी।

गंग वंश के शासकों के समय में उड़ीसा राज्य की बहुत उन्नति हुई। इस राजवंश के शासक राजा नरसिंह देव ने कोणार्क का विश्व भर में प्रसिद्ध सूर्य मंदिर बनवाया था। 16वीं शताब्दी के लगभग मध्य से 1592 तक उड़ीसा पांच मुस्लिम राजाओं द्वारा शासित रहा।

सन् 1592 में अकबर ने उड़ीसा को अपने अधीन कर अपने शासन में शामिल कर लिया। मुग़लों के पतन के पश्चात् उड़ीसा पर मराठों का अधिकार रहा। सन् 1803 में ब्रिटिश राज से पहले उड़ीसा मराठा शासकों के अधीन रहा।

मित्रो,

स्वतंत्रता संग्राम में उड़ीसा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पाइक संग्राम, गंजाम आंदोलन, और लारजा कोल्ह आंदोलन से लेकर सम्बलपुर संग्राम तक, ओडिसा की धरती ने विदेशी हुकूमत के खिलाफ क्रांति की ज्वाला को हमेशा नई ऊर्जा दी। कितने ही सेनानियों को अंग्रेजों ने जेलों में डाला, यातनाएं दीं, लेकिन आज़ादी का जुनून कमजोर नहीं हुआ। संबलपुर संग्राम के वीर क्रांतिकारी सुरेंद्र साय, हमारे लिए आज भी बहुत बड़ी प्रेरणा हैं।

पंडित गोपबंधु, आचार्य हरिहर और हरेकृष्ण महताब जैसे नायकों ने असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञाये आंदोलन में ओडिशा का नेतृत्व किया। रमा देवी, मालती देवी, कोकिला देवी, रानी भाग्यवती, ऐसी कितनी ही माताएँ-बहनें थीं, जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई को एक नई दिशा दी थी। इसी तरह, ओडिशा के आदिवासी समाज का भी स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान था। आदिवासियों ने अपने शौर्य और देशप्रेम से कभी भी विदेशी हुकूमत को चैन से बैठने नहीं दिया।

अनगिनत कहानियां हैं, अनगिनत त्याग और तपस्या की बलिदान की वीर गाथांए हैं, जिसे हमारी युवा पीढ़ी को जानना चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे वीर शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान और शौर्य गाथाओं से युवाओं में देश भक्ति की भावना मजबूत होगी और वे विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित होंगे।

मित्रो,

उड़ीसा और असम की अपनी-अपनी संस्कृति और परंपरा है, परंतु दोनों के बीच सदियों से एक मधुर संपर्क रहा है। जब बौद्ध भिक्षु एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा किया करते थे, उस कालखंड में भी दोनों प्रांतों के बीच अच्छा संपर्क स्थापित हुआ था।

यह संपर्क तब और प्रगाढ़ हुआ, जब पन्द्रहवीं शताब्दी में असम के प्रात:स्मरणीय महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने पुरी का भ्रमण किया।

श्रीमंत शंकरदेव का उत्कल प्रांत से आत्मिक लगाव था। वे वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए पुरी गए थे। आज भी असम के लोग हर साल पुरी जाते हैं और श्री जगन्नाथ जी के दर्शन कर स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं।

फिर जब इस क्षेत्र में अंग्रेज आए तब उन्होंने यहां के चाय बागानों में मजदूरी करने के लिए उड़ीसा से श्रमिकों को असम लाए थे। इसके बाद असमिया साहित्य के अग्रदूत साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने भी दोनों प्रदेशों के आपसी संबंध को मजबूत किया था। उन्होंने असमिया भाषा और संस्कृति के विकास और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वे अपने पारिवारिक व्यवसाय की देखरेख के लिए लगभग 20 साल तक संबलपुर, उड़ीसा में रहे। आज भी वहां उनकी पैतृक संपत्ति मौजूद है। यदि संक्षेप में कहूं तो उड़ीसा और असम का संबंध ऐतिहासिक रहा है।

उड़ीसा भारत का एक खूबसूरत राज्य है, जो अपने आकर्षित समुद्री तटों, दर्शनीय मंदिरों, खूबसूरत पर्यटन स्थलों, अपनी समृद्ध भाषा, साहित्य, कला व संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। ओडिसी नृत्य ओड़िया संस्कृति का गौरव और भारत का सबसे पुराना जीवित नृत्य है।

ऐतिहासिक धरोहरों वाला उड़ीसा न सिर्फ भारत, बल्कि पूरी दुनिया में पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र है। चारों धाम से एक धाम श्रीजगन्नाथ धाम, राजधानी भुवनेश्वर में मौजूद महाप्रभु श्री लिंगराज मंदिर, धौली स्तूप, खंडगिरी उदयगिरी गुफा अपने ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व के कारण पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

कोणार्क में स्थित सूर्य मंदिर अद्भुत है। यह न केवल हमारी समृद्ध संस्कृति और विरासत को दर्शाता है, बल्कि पौराणिक काल में हमारे सनातन धर्म के विकसित विज्ञान को प्रमाणित करता है। हमारे पूर्वजों ने इस मंदिर को इस अनोखे तरीके से बनाया है कि यह समय की गति को दर्शाता है।

यह मंदिर सूर्य देवता के रथ के आकार में बना हुआ है, जिसमें 12 जोड़ी पहिए और 7 घोड़े रथ को खींचते हुए दिखाया गया है। यह 7 घोड़े 7 दिन के प्रतीक हैं और 12 जोड़ी पहिए दिन के 24 घंटों को बताते हैं। इस मंदिर में 8 ताड़ियां भी हैं, जो दिन के 8 प्रहर को दर्शाते हैं।

आंध्र प्रदेश के वेद नारायण मंदिर के गर्भगृह में भगवान की प्रतिमा को इस तरह से स्थापित किया गया है कि भगवान की प्रतिमा पर साल में 3 दिनों के लिए सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। पहले दिन किरणें प्रतिमा के चरणों को स्पर्श करती हैं, दूसरे दिन वे नाभि तक पहुंचती हैं और तीसरे दिन वे मस्तक को छूती हुई गुजर जाती हैं।

हमारे देश में ऐसे अगिनत मंदिर हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि पौराणिक काल में हमारा खगोल विज्ञान और वास्तु कला कितना विकसित था। धर्म और संस्कृति के साथ हमें अपने विज्ञान पर भी गर्व करना चाहिए।

मित्रो,

ओडिसा के पुरी में स्थित जगन्नाथ मंदिर चार धामों में से एक है। कहा जाता है कि महान सुधारक और दार्शनिक आदि शंकराचार्य जी ने देश के चार कोणों में चार धाम का निर्माण किया था। उत्तर में बद्रीनाथ-केदारनाथ, पश्चिम में द्वारका, दक्षिण में रामेश्वरम और पूर्व में जगन्नाथ पुरी। आदि शंकराचार्य जी ने देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया।

मैं समझता हूं कि हम सभी देशवासियों में भी एकता की भावना प्रगाढ़ होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि क्षेत्रवाद की संकीर्ण सोच को दूर कर हमें एक भारत की भावना को अपने दिल में जागृत करनी होगी और एक श्रेष्ठ भारत के निर्माण के मिलकर काम करना होगा।

मेरा विश्वास है कि इस प्रकार के कार्यक्रम के जरिए आने वाले दिनों में सभी प्रदेशों के बीच एकता और भाईचारे की भावना और अधिक मजबूत होगी।

आइए, हम अपनी भाषा, साहित्य व संस्कृति की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ें। साथ ही देश के सर्वांगीण विकास की गति को तेज कर राष्ट्र को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाने संकल्प लें।

आप सभी को एक बार पुन: बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद!

जय हिंद !